

श्री गंगा चालीसा

जय जय जय जग पावनी, जयता देवसरिंग ।
जय शवि जटा नवासिनी, अनुपम तुंग तरंग । ।

जय जय जननी हरण अघखानी । आनंद करनी गंगा महारानी ।
जय भगीरथी सुरसरिमाता । कलमिल मूल दलनी वखियाता ।
जय जय जय हनु सुता अघ हननी । भीष्म की माता जग जननी ।
धवल कमल दल मम तनु साजे । लखी शत शरद चंद्र छविलाजे ।
वाहन मकर वमिल शुची सोहें । अमया कलश कर लखी मन मोहें ।
जडति रत्न कंचन आभूषण । हयि मणाहार, हरानतिम दूषण ।
जग पावनी त्रय ताप नसावनी । तरल तरंग तुंग मन भावनी ।
जो गणपति अति पूज्य प्रधान । तहूँ ते प्रथम गंगा असनाना ।
ब्रम्हा कमंडल वासिनी देवी । श्री प्रभु पद पंकज सुख सेवि ।
साठी सहस्र सागर सुत तारयो । गंगा सागर तीरथ धारयो ।
अगम तरंग उद्यो मन भावन । लखी तीरथ हरदिवार सुहावन ।
तीरथ राज प्रयाग अक्षयवट । धरयो मातु पुनिकाशी करवट ।
धनी धनी सुरसरिस्वरग की सीढ़ी । तारनी अमति पतिर पद पीढ़ी ।
भागीरथ तप कयौ उपारा । दयिो ब्रह्मा तव सुरसरि धारा ।
जब जग जननी चलयो हहराई । शम्भु जटा महं रहयो समाई ।
वर्ष पर्यंत गंगा महारानी । रहीं शम्भु के जटा भुलानी ।
मुनि भागीरथ शम्भुही ध्यायो । तब इक बूंद जटा से पायो ।
ताते मातु भई त्रय धारा । मृत्यु लोक नभ अरु पातारा ।
गई पाताल प्रभावती नामा । मन्दाकनी गई गगन ललामा ।
मृत्यु लोक जाह्नवी सुहावनी । कलमिल हरनी अगम जग पावनी ।
धनी भइया तब महिमा भारी । धर्म धुरी कलकिलुष कुठारी ।
मातु प्रभवति धनि मन्दाकनी । धनि सुर सरति सकल भयनासिनी ।
पान करत नरिमल गंगा जल । पावत मन इच्छति अनंत फल ।
पुरव जन्म पुण्य जब जागत । तबहीं ध्यान गंगा महँ लागत ।
जई पगु सुरसरी हेतु उठावही । तई जग अश्वमेघ फल पावही ।
महा पतति जनि कहू न तारे । तनि तारे इक नाम तहारे ।
शत योजन हूँ से जो ध्यावही । नशिचाई वषिणु लोक पद पावही ।
नाम भजत अगणति अघ नाशै । वमिल ज्ञान बल बुद्धि प्रकाशै ।
जमी धन मूल धर्म अरु दाना । धर्म मूल गंगाजल पाना ।
तब गुण गुणन करत दुःख भाजत । गृह गृह सम्पति सुमति विरिजत ।
गंगहि नेम सहति नति ध्यावत । दुर्जन हूँ सज्जन पद पावत ।
बुद्धिहीन वदिया बल पावै । रोगी रोग मुक्त झ हो जावै ।
गंगा गंगा जो नर कहहीं । भूखा गंगा कबहुँ न रहहीं ।
नकि सत ही मुख गंगा माई । श्रवण दाबी यम चलहीं पिराई ।
महँ अघनि अधमन कहं तारे । भए नरका के बंद कविरैं ।
जो नर जपे गंग शत नामा । सकल सदिधि पूरण हवै कामा ।
सब सुख भोग परम पद पावहीं । आवागमन रहति हवै जावहीं ।
धनि भइया सुरसरि सुख दैनी । धनि धनि तीरथ राज त्रविणी ।
ककरा ग्राम ऋषि दुर्वासा । सुन्दरदास गंगा कर दासा ।
जो यह पढ़े गंगा चालीसा । मली भक्ति अवरिल वागीसा । ।

अंत समाई सुर पुर बसल । सदर बैठी वमिन ।
सम्वत भुज नभ दशि, राम जन्म दनि चैत्र ।
पुरण चालीसा कया, हरभक्तन हति नैत्र ।